श्रवणबेलगोल में स्थित श्री भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक -2018 के उपलक्ष्य में आयोजित प्राकृत आंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में सहभागी डॉ. सुषमा रोटे।

JVSS में आयोजित 'जैन सिध्दांतों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता' राष्ट्रीय संगोष्ठी के शोधालेख पत्रिका का विमोचन डॉ. वीरसागर जैन , डॉ. जयकुमार उपाध्ये एवं ॲड. के. ए. कापसे के करकमलों से।

Jain Samaj of USA, Inc. संचलित श्री 108 भ. पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, न्यू जर्सी (USA) में मुकुट सप्तमी के दिन वार्षिक समारोह में प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. सुषमा रोटे जी का अभिभाषण ।

USA के वार्षिक समारोह में उपस्थित श्रावक एवं श्राविकाएँ।

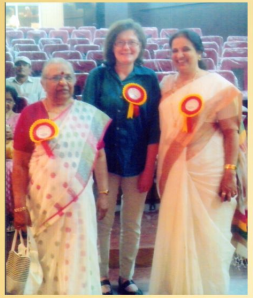

हम्पी के कर्नाटक युनिव्हर्सिटी में आंतरराष्ट्रीय सेमिनार के प्रसंगपर सेमिनार की उद्घाटक रशिया विद्यापीठ की प्रो. डॉ. क्रिस्टीन और डॉ. नागराजन के साथ डॉ. सुषमा रोटे।

कर्नाटक विश्वविद्यालय, हम्पी व्दारा आयोजित राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी के उपलक्ष्य में कुलपति डॉ. मल्लिका घंटी के साथ डॉ.सुषमा रोटे, श्री. गुणवंत रोटे, डॉ. जयकुमार उपाध्ये और डॉ.कल्पना जैन।

श्रवणबेलगोल में स्थित श्री भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक -2018 के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय जैन महिला सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में सहभागी डॉ. सुषमा रोटे।

ISSN मानांकन का प्रथम अंक 'वर्धमान महावीर' इस अनुसंधान पत्रिका का प्रकाशन करते हुए डॉ. डी. आर. मोरे साथ में प्रा. राजेंद्र रोटे, डॉ. सुषमा रोटे, लक्ष्मीसेन महाराज, प्राचार्य एन्. बी. गुंडे और गुणवंत रोटे।

जैन विद्या शोध संस्थान संचलित पाठ्यक्रम

पीएच. डी. संशोधन पदवी - जे. जे. टी. युनिव्हर्सिटी, झुंनझुनू. (राजस्थान) अंतर्गत
शोधनिदेशक - डॉ. सुषमा रोटे (दर्शनशास्त्र)

जैन विद्या शोध संस्थान प्रमाणित पाठ्यक्रम

परीक्षा माध्यम-मराठी/हिंदी

1. **जैन विद्या प्रवेश**	1. णमोकार भाग 1 ते 4
2. **जैन विद्या परिचय**	1. छहढाला 2. गृहस्थ गीता
3. **जैन विद्या प्रविण**	1. द्रव्यसंग्रह 2. रत्नकरण्डकश्रावकाचार
4. **जैन विद्या विशारद**	1. तत्त्वार्थसूत्र -आचार्य उमास्वामी

बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ,श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) का दूरस्थ पाठ्यक्रम

परीक्षा माध्यम- हिंदी /कन्नड

प्राकृत प्रथमा (एक साल) (प्रश्नपत्र दो)	1. भाषा परिचय एवं कथा - संग्रह २. व्याकरण एवं पद्य - संग्रह
प्राकृत मध्यमा (दो साल) (प्रश्नपत्र छह)	1. भाषा एवं साहित्य 2. सिध्दान्त एवं प्राकृत वाक्यरचना 3. मुक्तककाव्य 4. जैनागम तथा कथासाहित्य 5. गद्यसाहित्य एवं आचारशास्त्र 6. दर्शनशास्त्र
प्राकृत विशारद (तीन साल) (प्रश्नपत्र बारह)	1. पद्यसाहित्य एवं व्याकरण 2. तत्वमीमांसा 3. अध्यात्मशास्त्र 4. कथासाहित्य एवं आचार शास्त्र 5. व्याकरण 6. श्रमणसाहित्य 7. जीवनविज्ञान 8. आचारशास्त्र 9. चरितकाव्य एवं व्याकरण (प्राकृत) 10. अनुप्रेक्षा साहित्य 11. अध्यात्मशासस्त्र 12. चरितकाव्य साहित्य
प्राकृत रत्न (दो साल) (प्रश्नपत्र आठ)	1. पद्यसाहित्य 2. गद्यसाहित्य 3. व्याकरण 4. आचार्य कुन्कुन्द तथा सिध्दसेन का दर्शन 5. सट्टक साहित्य तथा समयसार 6. अपभ्रंश साहित्य 7. अपभ्रंश पद्यसाहित्य 8. प्राकृत साहित्य का इतिहास एवं विदेशों में प्राकृतविद्या का अध्ययन

JVSS

परिचय-पुस्तिका

मातोश्री रुक्मिणीबाई महाप्पा रोटे पब्लिक चॅरिटेबल ट्रस्ट, कोल्हापूर संचलित
Regd. No. E. 1060 (Kolhapur) Dated 24-2-1986

जैन विद्या शोध संस्थान

स्थापना: 24-12-2004

(Jainalogy Research Center)

(विश्वविद्यालयीन जैन विद्या एवं प्राकृत पत्राचार पाठ्यक्रमों का अध्ययन, अध्यापन -मार्गदर्शन एवं परीक्षा केंद्र)

517/ई, फ्रेंडस् कॉलनी, शिवाजी पार्क, कोल्हापूर -416001 फोन: (0231) 2537062, 98812 50151

E-mail: sushamagr@gmail.com

website: **www.jainvidya.com**

जैन विद्या शोध संस्थान

मातोश्री रुक्मिणीबाई मह्ळाप्पा रोटे पब्लिक चॅरिटेबल ट्रस्ट, कोल्हापुर नामक संस्था की 1986 ई. में प्रतिष्ठापना की गई। गत (29) वर्षों में ट्रस्ट के व्दारा सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं को अर्थसहाय्य दान के रुप में प्रदान करके कतिपय लोककल्याणकारी कार्य किए गए। ट्रस्ट के कतिपय उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य अहिंसा, मानवता, समता, अनेकान्त , दर्शन आदि जीवन सिध्दांतों का प्रचार प्रसार करना रहा है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्था के अध्यक्ष स्व. श्री. गणपतरावजी रोटे एवं कार्याध्यक्ष प्राचार्य नेमिनाथजी गुंडे की प्रेरणा से जैन विद्या शोध संस्थान(JVSS) की स्थापना 2004 ई. में की गयी। यह संस्था हिंदी, मराठी, अंग्रेजी एवं कन्नड भाषा माध्यम में **जैनागम, प्राकृत भाषा और जैन साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, अध्यापन एवं शोध केंद्र के रुप में भी कार्यरत रही है।**

जैन विद्या शोध संस्थान का परिचय -

ट्रस्ट के उद्देश्य के अनुसार अहिंसा, प्राकृत भाषा तथा जैन साहित्य का अध्ययन, संशोधन, एवं प्रकाशन हेतु जैन विद्या शोध संस्थान की स्थापना गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागर जी के करकमलों व्दारा हुई। भारतीय संस्कृति, समाज एवं साहित्य का अभ्यास अनेक विश्वविद्यालयों में आज हो रहा है। इसवी सन पूर्व छठी शताब्दी में भगवान महावीर, गौतम बुध्द ये युगप्रवर्तक **(Epoch Making Personality)** हुए हैं। उनके अहिंसा एवं अनेकान्त तत्त्वों का प्रभाव महात्मा गांधी तथा पाश्चात्य विद्वान आइनस्टाइन, बर्टन रशेल और मार्टिन ल्युथर किंग आदि पर दिखाई देता है। प्राचीन और मध्ययुगीन काल में जैन दर्शन और प्राकृत भाषा का बहुत बडा प्रभाव समाज और संस्कृति पर दिखाई देता है। जैन भारतीय संस्कृति और समाज के अध्ययन पर आधुनिक संदर्भ में शोध कार्य इस संस्थान के माध्यम से किया जा रहा है। ''णाणं णरस्स सारं ''अर्थात -' ज्ञान ही मनुष्य जीवन का सार है ,' यह संस्थान का ब्रीदवाक्य है ।

जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा में साहित्य और भाषा की अनेक विशेषताएँ दिखाई देती है। प्राकृत भाषा को ही सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी कहा जाता है। प्राकृत भाषां के अनेक ग्रंथ, कथा साहित्य , महाकाव्य,चरितकाव्य आदि वर्तमान भारतीय भाषाओं में विस्तारित हुई है। आज भारतीय विश्वविद्यालयों एवं विदेशी विश्वविद्यालयों में प्राचीन भारतीय भाषाओं के अनेक ज्ञानशाखाओं का अध्ययन हो रहा है। मानवी कलाओं का विकास , स्थापत्यशास्त्र, मानव की पर्यावरण एवं कुदरत/प्रकृति के प्रति प्राचीन दृष्टि,वैद्यकशास्त्र,ध्यान और योग विद्या, वास्तु शास्त्र, शिल्प चित्र,संगीत आदि कलाओं का अध्ययन मानवी विकास के लिए उपयुक्त है। वर्तमान में इन सभी कलाओं और विद्याशाखाओं का अध्ययन करते समय जैन दर्शन और प्राकृत भाषा के विद्याशाखाओं का महत्व आज के संदर्भ में रेखांकित करना आवश्यक प्रतित होता है।

तीर्थंकर महावीर के दिव्य उपदेश, गणधरों एवं आचार्यों द्वारा लोकभाषा प्राकृत में सुरक्षित रहें हैं। प्राकृत भाषा भारत की प्राचीनतम आर्य भाषा है। जिसका संबंध भारत की सभी भाषाओं के साथ जुडा हुआ है। संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल आदि भाषाओं में जैन प्राकृत साहित्य के अनुवाद, टीका ग्रन्थ आदि युगीन आवश्यकता के अनुसार निर्माण हो चुके है। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त ,कर्म सिध्दान्त आदि जीवन मूल्यों **(Life Values)** और विविध विज्ञानों तथा कलाओं का साहित्य जैन विद्या साहित्य में आज भी सुरक्षित रहा है। अत: उस साहित्य को प्रकाश में लाना इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य रहा है। आधुनिक भारतीय भाषाओं में आत्मकल्याण एवं मन:शांति का ज्ञान भंडार मानव कल्याण के लिए उपयुक्त है। उन सभी ज्ञानशाखाओं का अध्ययन, संशोधन करना उपयुक्त सिध्द होगा, इस उद्दात्त हेतु से संस्थान विश्वविद्यालयीन मान्यताप्राप्त पत्राचार पाठ्यक्रम : **प्राकृत एवं जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन** **(Prakrit , Jainology And Comparative Religion, Philosophy)** का अध्ययन, एवं परीक्षा केंद्र के रुप में कार्य कर रहा है। आज संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है।

जैन आगम ग्रंथों में सिध्दांत, तत्वज्ञान आदि चार अनुयोगों का साहित्य उपलब्ध है। इन सभी ज्ञान शाखाओं के विषय में भगवान महावीर का दृष्टिकोन क्या था? जीवन के दु:खों से छुटकारा पाने हेतु कौनसा मार्ग अपनाना चाहिए? इनका समाधान जैन सिध्दांतों के अध्ययन एवं संशोधन से निश्चित रुप में प्राप्त होता है। आज के सभी आधुनिक ज्ञानशाखाओं का वैज्ञानिक विवेचन जैनागम में मिलता है। जैन दर्शन ने बाह्य जगत को जानना, उतना ही आवश्यक माना है, जितना आत्मचिंतन को माना है। जहाँ वैश्विक विवेचन की प्रमुखता है वहाँ त्रिलोक में व्याप्त छ:द्रव्यों की चर्चा आती है और जहाँ आत्मिक तत्त्व प्रमुख है वहाँ सप्त तत्व, योग-ध्यान-तप का विवेचन होता है। वर्तमान में जरुरत है, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की। विज्ञान की कसौटी पर सिध्दांत का परीक्षण करके उनमें समन्वय स्थापित करना आज की नितांत आवश्यकता है।

वर्तमान स्थिति-

आज हमें यह जानना और सोचना होगा कि भोगवादी जीवनशैली के दुष्परिणामों कों किस तरह हम भुगत रहे हैं। यह चिंता का विषय बन गया हैं कि युवा पीढी आज के परिवेश में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलकर किस तरह पतन की ओर जा रही है। ऐसी परिस्थिति में जीवन मूल्यों के प्रचार की आवश्यकता हैं, जो आनेवाली पीढी को भोगवादी प्रभाव से दूर रखे और अपनी संस्कृति की गरिमा बनाकर संयमित जीवन शैली को अपना ले, नहीं तो युवा पीढी संस्कृति और सभ्यता से बहुत दूर होकर गहरे गर्त में जा गिरेगी।

जैन सिध्दांतों के वैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखकर , उनकी रुपरेखा युवा पीढी को आधुनिक संदर्भ में समझायी जाए तो वे स्वेच्छा से प्राचीन भारतीय संस्कृति और जीवनमूल्यों को अपनाने को तैयार हो जाएगी। जैन विचारधारा मानवतावादी , प्रगतिशील, पुरुषार्थवादी एवं आत्मवादी होने के साथ -साथ निरिश्वरवादी होने के कारण जैन दर्शन का अस्तित्व एवं परंपरा स्वतंत्र रुप से आज भी विद्यमान है।

वर्तमान की आवश्यकता-

जैन जीवन दृष्टि अनेकांत पर आधारित है और जैन आचार अहिंसा पर प्रतिष्ठित है। वर्तमान में जैन सिध्दान्तों की यथार्थता वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परखी जा रही है। अत:आवश्यकता है, जैन सिध्दांतों का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन करने की। हर एक जिज्ञासु निम्नांकित जीवन मूल्यों को अपना ले तो उसका जीवन सुखी एवं समृध्द बन जाएगा। **आचार में अहिंसा, विचार में अनेकान्तवाद, वाणी में स्याव्दाद और जीवन में अपरिग्रह, यही वीतराग विज्ञान है।**

संस्थान की इन सभी उद्देश्य की पूर्ति के लिए और शोधार्थी को संशोधन सुविधा उपलब्ध हो इस उदात्त हेतु से शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर (महाराष्ट्र) व्दारा जैन विद्या शोध संस्थान (गतडड) को मान्यता मिल जाए इसलिए हमारा प्रयास चल रहा है।

जैन विद्या शोध संस्थान की विशेषताएँ :

1. संस्था में जैन सिध्दांतों का तुलनात्मक अध्ययन, अध्यापन, संशोधन एवं अनुसंधान कार्य चल रहा है। इस संस्थान से जे.जे. टी. युनिव्हर्सिटी झुनझुनुँ (राजस्थान) 'आचार्य उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र में प्रतिपादित सप्त तत्वों का अनुशीलन' इस विषय पर संस्थान की शोध छात्रा डॉ. सुलोचना पाटील जी ने डॉ. सुषमा रोटेजी के मार्गदर्शन में पीएच्. डी उपाधि प्राप्त की है।
2. म्हैसुर विश्वविद्यालय मान्यताप्राप्त राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान , श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) संचलित प्राकृत प्रथमा-प्राकृत रत्न तक आठ साल के पाठ्यक्रमों का प्राकृत साहित्य का अध्यापन एवं परीक्षा संस्थान में होती है। इस संस्थान के निदेशक डॉ. सुषमा रोटे जी श्रवणबेळगोल संस्था के फॅकल्टी मेंबर (संकाय सदस्य) के रुप में कार्यरत है।
3. संस्थान में जैन विद्या प्रवेश - जैन विद्या विशारद तक धर्म एवं तत्त्वज्ञान का चार साल का पाठ्यक्रम पढाया जाता है। हिंदी, मराठी ,अंग्रेजी और कन्नड शिक्षा का माध्यम है ।
4. संस्थान में शोध कार्य हेतु 4500 किताबों का समृध्द ग्रंथालय उपलब्ध है। इसमें आगम ग्रंथों से लेकर आधुनिक सिध्दांत ग्रंथ, अनुसंधान पत्र -पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं।
5. संस्थान व्दारा 'वर्धमान महावीर ' (ISSN : 2395-2245(P) अनुसंधान पत्रिका प्रकाशित की जाती है। 'द्रव्यसंग्रह ' , 'षोडशभावना' और संदर्भ पुस्तक के रुप में 'जैन सिध्दांतों की प्रासंगिकता 'ग्रंथ प्रकाशित किए गए है।
6. आज तक जैन विद्या शोध संस्थान द्वारा 1100 विद्यार्थियों ने जैन सिध्दांत, तत्वज्ञान, अहिंसा, आचारसंहिता, योग-ध्यान , साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आधुनिक संदर्भ में किया है और विश्वविद्यालयीन परिक्षाएँ भी उत्तीर्ण की है।
7. ' जैन सिध्दांतों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता 'इस विषय पर व्दि- दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 17 तथा 18 जनवरी 2016 को किया गया। उद्घाटक के रुप में प्रा. डॉ. वीरसागर जैन, विभागाध्यक्ष, जैन दर्शन, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली उपस्थित थे। तथा समापन समारोह के अध्यक्ष के रूप में प्रा. डॉ. जयकुमार उपाध्ये, प्राकृत विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ , नई दिल्ली . उपस्थित थे। कुल ४५ शोधालेख प्रस्तुत किए गए । संदर्भ पुस्तक के रुप में इसका प्रकाशन हुआ है।
8. हर साल वर्धापन दिन समारंभ के उपलक्ष्य में प्रमुख अतिथि के रुप में प्रतिष्ठित विद्वानों के द्वारा विद्यार्थियों को मार्गदर्शन तथा उनका गुणगौरव किया जाता है। जैसे कि शिवाजी विश्वविद्यालय से पूर्व कुलपति डॉ. एन्. जे.पवार, पूर्व कुलपति डॉ. माणिकराव साळुंखे, आचार्य देशभुषण प्रसारक मंडल के चेअरमन ॲड. के.ए. कापसे, विश्वविख्यात योगतज्ञ डॉ. धनंजय गुंडे, शिवाजी विश्वविद्यालय के ॲकॅडमिक ॲडव्हायझर डॉ. डी. आर. मोरे आदि का मार्गदर्शन रहा है।
9. हर साल छात्रों के आध्यात्मिक उन्नति के लिए 'णमोकार ध्यान शिबिर' का आयोजन किया जाता है।
10. पोस्टर्स के माध्यम से मार्गदर्शन किया जाता है।
11. संस्था में ई-लर्निंग और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है।
12. वर्धापन दिन के उपलक्ष्य में श्रुत-प्रज्ञा शोध प्रतियोगिता एवं विविध स्पर्धाओंका आयोजन किया जाता है।
13. प्राचीन जैन ऐतिहासिक तीर्थ यात्राओं का आयोजन ।

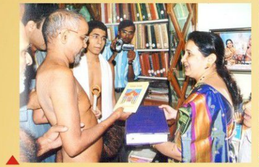

सन् 2007 में जैन विद्या शोध संस्थान के वर्धापन दिन के उपलक्ष में राष्ट्रसंत मुनि श्री तरूणसागरजी का आगमन एवं ग्रंथालय का अवलोकन।

श्रुतप्रज्ञा प्रतियोगिता के उद्घाटन समारंभ प्रसंगी डॉ. धनंजय गुंडे और मान्यवर।

वर्धापन दिन समारंभ के उपलक्ष में कोल्हापूर के शिवाजी विद्यापीठ के कुलपति डॉ.माणिकराव साळुंखेजी का JVSS में सन्मान करते हुए श्री. गुणवंत रोटे जी।

जैन विद्या शोध संस्थान की नूतन वास्तू उद्घाटन समारोह प्रसंगी.प. पू. भट्टारकरत्न डॉ. लक्ष्मीसेन महास्वामी जी तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.एन्.जे. पवार एवं ध.श्री. गणपतराव रोटे।

.''वर्धमान महावीर: अहिंसा विशेषांक '' का प्रकाशन करते हुए कुलपति डॉ. एन्.जे.पवार, डॉ. बी.डी .खणे और प्राचार्य एन्. बी. गुंडे।

.संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सुषमा जी का सन्मान करती हुई म्हैसूर विद्यापीठ के जैन दर्शन विभाग की अध्यक्षा डॉ. पद्मरेखा साथ में श्रवणबेलगोल के बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के निदेशक डॉ. प्रेमसुमन जैन।